घर अश्रु का

निर्मिश ठाकर

बी-64, हेरिजटेज बंगलोज़, साइंस सिटी के पास, अहमदाबाद-380060
मो. 9436614631

'जाती हूं मेरे घर' कह
आंचल से आंखें पोंछकर
नारी जाती है
कभी ससुराल तो कभी पीहर।
'यह मेरा घर' का भ्रम पालकर
थोड़ा ठहर लेती है वह
कभी 'अखण्ड सौभाग्यवती' के
तो कभी 'गंगास्वरूप' के छप्पर तले।
स्कूटर, फ्रिज़ टीवी-के इश्तहार वाले
अखबार के पन्ने में छापा जाता है :
'चाहिए कन्या : सुन्दर, सुशील सुशिक्षित...'
घर की खोज ले जाती है नारी को
यहां से वहां, यहां से यहां, यहां से...
रामराज्य में भी घर न पाने वाली
सीता को समा जाना पड़ता था धरती में!
अश्रु को घर कैसा?

कुलभूषण कालड़ा

27, मजीठिया एनक्लेव फेज-2, पटियाला (पंजाब) 147005, मो. 09814245174

क्षणिकाएं

1. सफेद लहू

आज फिर
किसी अपने ने
अपनत्व की
चढ़ा दी है बलि
और
अलग होने को है
नाखूनों से मांस
रगों में बहता लहू
फिर निकला है
सफेद।

2. संवेदनहीन

वे संवेदनहीन हैं
'पत्थर' दिल हैं
छिपी रहती हैं
उनकी माथे की शिकनें
तनी हुई
क्योंकि कठिन है
उनके लिए
सत्य कहना
सुनना वा सहना